भारत का इतिहास गुलामी नहीं संघर्षों का इतिहास है : बलदेव भाई शर्मा

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हुआ ऑनलाइन चर्चा का आयोजन

नई दिल्ली, 15 अगस्त (नवोदय टाइम्स) : भारत के 74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर साहित्य अकादमी द्वारा स्वतंत्रता, संविधान व साहित्य विषय पर एक ऑनलाइन चर्चा का आयोजन किया। जिसमें कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि भारत का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं बल्कि सतत संघर्षों का इतिहास है। हमारा संविधान स्वतंत्रता को एक अधिकार के रूप में मान्यता देता है लेकिन किसी अन्य के अधिकारों का अतिक्रमण करने की कतई छूट नहीं देता। उन्होंने ऋग्वेद, रामचरितमानस और जयशंकर प्रसाद तथा मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं के द्वारा साहित्य की मूल चेतना को रेखांकित किया। कथाकार चित्रा मुद्गल ने कहा कि लेखक शोषित, पीड़ित जनता के संघर्षों को अभिव्यक्त करता है लेकिन स्वतंत्रता का मतलब उच्छृंखलता नहीं है इसलिए लेखक को बहुत सतर्क और संवेदनशील होकर संविधान सम्मत विचारों को अभिव्यक्त करना चाहिए। सिक्किम के पूर्व राज्यपाल बी.पी.सिंह ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय ज्ञान परंपरा मुखरित थी। कवयित्री सुकृता पॉल कुमार ने रचनाकार की स्वतंत्रता और रचना के भीतर पात्रों के स्वातंत्र्य को अपने वक्तव्य में व्याख्यायित किया। अकादमी सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि संविधान द्वारा प्रतिभूत सबसे पहली स्वतंत्रता वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। स्वतंत्रता के अध्याय में इसे शीर्षस्थ स्थान देना इस बात का प्रमाण है कि यह लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की आधारशिला है।